वासुदेव अपरिमेयसुधामन शुद्ध सदोदित सुन्दरिकान्त
धराधर धारिणवेधुरधर्तः सौधइतिदीधितिवेधइविधातः॥
अधिक बन्धं रन्धय बोधात छिन्धि पिधानं बन्धुरं अद्धा
केशव केशव शासक वन्दे पाशधरार्चित शूरवरेश॥२॥
नारायण अमलकारण वन्दे कारणकारण पूर्ण वरेण्य
माधव माधव साधक वन्दे बाधक बोधक शुद्धसमाधे॥३॥
गोविन्द गोविन्द पुरन्दर वन्दे स्कन्दसनन्दनवन्दितपाद
विष्णो स्रजिष्णो ग्रसिष्णो विवन्दे कइष्ण सदुष्णवधिष्णो
सुधइष्णो॥४॥
मधुसूदन दानवसादन वन्दे दैवतमोदन वेदितपाद
त्रिविक्रम निष्क्रम विक्रम सुक्रम स~ण्क्रमहु~ण्कइतवक्त्र वन्दे॥५॥
वामन वामन भामन वन्दे सामन सीमन शामन सानो
श्रीधर श्रीधर शन्धर वन्दे भूधर वार्धर कन्धरधारिन॥६॥
हइषीकेश सुकेश परेश विवन्दे शरणेश कलेश बलेश सुखेश
पद्मनाभ शुभोद्भव वन्दे सम्भइतलोकभराभर भूरे॥७॥
दामोदर दूरतरान्तर वन्दे दारितपारगपार परस्मात॥८॥
आनन्दतीर्थमुनीन्द्रकइता हरिगीतिः इयं परमादरतः
परलोकविलोकनसूर्यनिभा हरिभक्तिविवर्धनशौण्डतमा॥९॥